इकाई 1 हिन्दू : संकल्पना के प्राचीन सन्दर्भ

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 हिन्दू शब्द का वैदिक मूल

1.3 पौराणिक तथा आगमिक प्राचीन सन्दर्भ

1.4 हिन्दू शब्द देशवाचक है या गुणधर्मवाचक?

1.5 हिन्दू राष्ट्र' का विस्तार कहाँ तक है।

- 1.5.1 हिन्दू राष्ट्र और भारत
- 1.5.2 हिन्दू राष्ट्र की व्याप्ति
- 1.5.3 हिन्दू और भारतीय में भेद और अभेद

1.6 हिन्दू राष्ट्र, आर्यावर्त और भारतवर्ष

- 1.6.1 'हिन्दू पद' के आधुनिक प्रयोग

1.7 सारांश

1.8 शब्दावली

1.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

1.10 बोध प्रश्न

1.0 उद्देश्य

हिन्दू अध्ययन के प्रथम पाठ्यक्रम की इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप :

- हिन्दू विषयक वैदिक सन्दर्भ को बता सकेंगें
- हिन्दू से सम्बन्धित अन्य प्राचीन सन्दर्भों का परिचय दे सकेंगें।
- हिन्दू शब्द किसका वाचक है? इसका विशलेषण कर सकेंगें।
- हिन्दू राष्ट्र विषयक अवधारणा को स्पष्ट कर पायेंगें।
- 'आर्यावर्त' और 'भारत' की तथ्यपरक व्याख्या बता सकेंगें।
- हिन्दू शब्द की संकल्पना को बता सकेंगें।

1.1 प्रस्तावना

वस्तुतः भारत के किसी भी ज्ञान–विज्ञान का मूल वेद है। कोई भी संकल्पना प्रमाण के रूप में वेद में ही ढूढ़ी जाती है। प्रश्न यह उठता है कि क्या हिन्दू अथवा हिन्दू विषयक शब्दों का उल्लेख वेद में मिलता है?इस प्रश्न को लेकर विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वान मानते हैं कि हिन्दू शब्द वेद में नहीं है अतः यह सम्प्रत्यय नया है। कुछ विद्वानों का मत है कि हिन्दू शब्द भले ही सीधे–सीधे अनुपलब्ध हो किन्तु एक भौगोलिक तथा वंशावली के सम्प्रत्यय के रूप में उपस्थित है। इसके उत्तर के लिए हम वैदिक मनीषा की ओर जाते हैं तो पाते हैं कि, कहीं पर इन शब्दों का उल्लेख देशवाचक है और कहीं पर गुणवाचक। ऋग्वेद के आठवें मण्डल में इसका

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

उदाहरण देखा जा सकता है–

य ऋक्षादंहसो मुचद्यो वार्यात् सप्त सिन्धुषु।
वधर्दासस्य तुविनृम्ण नीनमः।।

यहाँ पर बताया गया कि हे इन्द्र आप हमें विकट मानसिक पापों से मुक्त करते हैं। यही कारण है कि हम इस आर्य भूमि सप्तसिन्धु देश में सुख और सम्पन्नता पूर्वक रह रहें हैं। आप से प्रार्थना है कि दुष्ट और अनाचारी लोगों का वध करें।

ऋग्वेद और अथर्ववेद में इस तरह कि बातें मिलती हैं। सप्तसिन्धु शब्द इन दोनों ग्रन्थों में उपलब्ध है जैसे–ऋग्वेद में पाँच अन्य स्थलों पर भी सप्त सिन्धु आया है। इसी प्रकार अथर्ववेद में चतुर्थ काण्ड के द्वितीय अनुवाक् (छठे सूक्त) का दूसरा मन्त्र हैः

यावती द्यावा पृथिवी वरिम्णा
यावत सप्त सिंधवो वितष्ठिरे।
वाचं विषस्य दूषणीं,
तामितो निरवादिषम्।।

अर्थात् इस सप्त सिन्धु देश के सम्पूर्ण विस्तार में तथा समस्त् पृथ्वी और द्यो लोक में विषाक्त वाणी का अभाव हो। विष से रहित वाणी हो। विषाक्त वाणी को सर्वत्र दूर ही रखा जाय।

इस प्रकार उक्तानुसार हिन्दू संकल्पना के प्राचीन सन्दर्भो का विस्तृत अध्ययन इस इकाई में आप करेंगें। अध्ययन के पश्चात् हिन्दू अर्थ वाले शब्दों, संकल्पनाओं एवं अवधारणाओं की विस्तृत विवेचना करने में सक्षम हो जायेंगें। हिन्दू विषयक तथ्यों के साथ भारत एवं आर्यावर्त का स्पष्ट उल्लेख भी कर पायेंगें।

1.2 हिन्दू शब्द का वैदिक मूल

प्रश्न : हिन्दू संकल्पना के प्राचीन सन्दर्भ क्या हैं?

उत्तर : हिन्दू संकल्पना का मूल है वेद। ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में भारतवर्ष के लिए ''सप्त सिन्धवः'' एवं 'सिन्धवः' शब्दों का प्रयोग है।

प्रश्न : वेदों में इन शब्दों का उल्लेख किस रूप में हुआ है?

उत्तर : अधिकांश स्थलों पर इन शब्दों का उल्लेख देशवाचक है। ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के 24वें सूक्त का 27वां मन्त्र है :–

य ऋक्षादंहसो मुचद्यो वार्यात् सप्त सिन्धुषु।
वधर्दासस्य तुविनृम्ण नीनमः।।

अर्थात् हे इन्द्र, आप हमें ऋक्ष (भालू) जैसे विकट मानसिक पापों से मुक्त करते हैं। इसी कारण हम इस आर्यभूमि सप्त सिन्धु देश में सुख–सौभाग्य से सम्पन्न हैं। आप दुष्ट उपद्रवकारी, अनार्य आचरण वाले लोगों के वध के लिए वज्र प्रहार करें।

ऋग्वेद में पाँच अन्य स्थलों पर भी सप्त सिन्धु आया है। इसी प्रकार अथर्ववेद में चतुर्थ काण्ड के द्वितीय अनुवाक् (छठे सूक्त) का दूसरा मन्त्र है :

यावती द्यावा पृथिवी वरिम्णा

यावत सप्त सिंधवो वितष्ठिरे।
वाचं विषस्य दूषणीं,
तामितो निरवादिषम्।।

अर्थात् इस सप्त सिन्धु देश के सम्पूर्ण विस्तार में तथा समस्त् पृथ्वी और द्यौ लोक में विषाक्त वाणी का अभाव हो। विष से रहित वाणी हो। विषाक्त वाणी को सर्वत्र दूर ही रखा जाय।

इस प्रकार इस समस्त् राष्ट्र को सप्त सिन्धु कहा गया है।

प्रश्न : 'सिन्धु' को हिन्दू कैसे कह सकते हैं।

उत्तर : संस्कृत का 'स' प्राकृत में 'ह' हो जाता है। हिन्दू शब्द सिन्धु का ही प्राकृत रूप है। वेद में निरूक्त के नियमानुसार सकारहकार रूप में भी उच्चरित होता है। सरस्वती, सिन्धु आदि को क्रमशः 'हरस्वती' व 'हिन्धु' भी उच्चरित किया जाता है।

अतः 'सिन्धवः' को 'हिन्धवः' तथा 'हिन्दवः' भी उच्चारित करेंगे। यह निरूक्त का नियम है।

इस प्रकार हिन्दू शब्द वैदिक है और वह सिन्धु का ही उच्चरित रूप है।

पारसीक भाषा में तो सिन्धु को हिन्दू ही कहते हैं। सप्तसिन्धु के लिये वहाँ हप्तहिन्दू कहा जाता है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भविष्य पुराण में भी प्रतिसर्ग पर्व के अध्याय 5 में 'हप्तहिन्दू' शब्द का उल्लेख हुआ है।

यूनानी भाषा में भी 'ह' का लोप हो जाता है और 'स' के लिये वहाँ भी 'ह' का प्रयोग होता है। इस प्रकार प्राचीन वृहद भारत के विशाल क्षेत्र में 'सकार' का 'हकार' बोलने और लिखने की प्राचीन परम्परा है। इसीलिये निरूक्त में उसका उल्लेख किया गया है। इस प्रकार 'हिन्दू' शब्द वैदिक है और परम पवित्र है। मूल शब्द में ही सभी शब्दों का इतिहास और संस्कृति रहती है। इसलिये हिन्दू शब्द का भारत की समस्त् संस्कृति से अभिन्न सम्बन्ध है।

प्रश्न : यदि सीधे–सीधे 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग वेदों में नहीं है तो क्या वैदिक धर्म मानने वालों को हिन्दू कहना ठीक है?

उत्तर : पहली बात, जैसे पूर्व में बता चुके हैं, निरूक्त के नियमानुसार 'हिन्दवः' भी वैदिक शब्द ही कहा जाएगा। दूसरी बात, वेद धर्म का मूल हैं। उनमें धर्म का ही मूल प्रतिपादन है। अपने देश और समाज को भारतवासी किस नाम से पुकारें, किस से नहीं, इसका कोई निर्देश वेद में नहीं है।

इसकी जगह प्रत्येक व्यक्ति में चिन्मय सत्ता का अंश वेद बताते हैं। अतः व्यक्ति और समाज मूल भाव के अनुरूप यथोचित् शब्द प्रयोग के अधिकारी हैं। इसलिए वेदों में जिन्हें हिन्दू शब्द सीधे नहीं समझ में आये तो भी उन्हें यह जानना चाहिये कि ऐसी स्थिति में भी हिन्दू शब्द के प्रयोग में कोई बाधा नहीं है। क्योंकि वेदों में तो वैदिक संस्कृत भाषा का ही प्रयोग है। वर्तमान में तो भारत के निवासियों द्वारा वैदिक संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भाषाएँ व्यवहार में हैं। संस्कृत से निकली प्राकृत, अपभ्रंश तथा वर्तमान भारत की समस्त् भाषाएँ इन दिनों स्वाभाविक प्रयोग में आती हैं। अतः 'सप्तसिन्धवः' और 'सिन्धव' वैदिक शब्द के स्थान पर 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग स्वाभाविक है।

मूल तथ्य यह है कि स्वयं वैदिक नियमों के अनुसार 'सिन्धवः' ही 'हिन्दवः' है जो हिन्दू का बहुवचन है। अतः 'हिन्दू जन' यह वैदिक पद ही माना जाएगा। परन्तु राष्ट्रीय समाज जिस प्रकार वैदिक संस्कृत के स्थन पर उससे निकली विविध भाषाएँ बोलते हैं, उसी प्रकार अपने समाज के लिए वर्तमान में प्रचलित 'हिन्दू' शब्द बोलते हैं, यह भी पर्याप्त आधार है।

इस सन्दर्भ में एक बात और है जो नितान्त भिन्न प्रकार की है। वह यह कि संसार के अनेक प्रमुख समाज अपने लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, जो उनके मूल पवित्र ग्रन्थों में नहीं हैं। जैसे, इस्लाम मजहब का सर्वमान्य दैवी ग्रन्थ कुरानशरीफ है। कुरानशरीफ में कहीं भी यह नहीं कहा है कि अल्लाह ने आखिरी पैगम्बर साहब के जरिए 'इस्लाम' नामक मजहब का पैगाम भेजा। वहाँ केवल मजहब के पैगाम दिए गए हैं। उसका अलग से नाम नहीं गिनाया गया है। फिर भी कुरानशरीफ एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह और आखिरी पैगम्बर साहब पर ईमान लाने वाले लोग अपने मजहब को इस्लाम कहते हैं। उन पर कोई यह प्रश्न नहीं खड़ा करता कि आपकी पाक क्तिाब में तो मजहब को इस्लाम नाम नहीं दिया गया है, तब आप लोग अपने मजहब को इस्लाम और स्वयं को मुसलमान क्यों कहते हैं? अभी 75 वर्ष पहले तक यूरोप के लोग इस्लाम को मुहम्मदनिज्म कहते थे। परन्तु अब क्योंकि मजहब को मानने वाले लोग अपने मजहब को इस्लाम कहते हैं तो यूरोपीय लोगों ने भी उनके मजहब को इस्लाम कहना शुरू कर दिया है।

इसी तरह उस मजहब को मानने वाले, उस पर ईमान लाने वाले, आज्ञाकारी लोगों के लिए 'मोमिन' शब्द कुरान में है। उन्हें मुस्लिम या मुसलमान कहा जाए, ऐसा कोई पैगाम अल्लाह ने आखिरी पैगम्बर के जरिए नहीं भेजा। फिर भी वे स्वयं को मुस्लिम या मुसलमान कहते हैं। उस समाज का मुस्लिम नाम स्वाभाविक या सर्वमान्य है। अतः इसी प्रकार स्वयं को हिन्दू कहने वाले समाज का नाम हिन्दू है। यह भी स्वाभाविक एवं सर्वमान्य है।

इसी प्रकार, ईसाई लोगों (क्रिश्चियन्स)की पवित्र पुस्तक न्यू टेस्टामेंट (बाइबिल) में यह कहीं भी नहीं कहा है कि उन पर 'फेथ' लाने वाले लोग 'क्रिश्चियन' या ईसाई कहे जाएँगे। फिर भी वे सभी लोग जो जीसस में 'फेथ' लाते हैं, स्वयं को क्रिश्चियन या ईसाई कहते हैं। यही स्वाभाविक एवं सर्वमान है।

अतः इसी प्रकार हिन्दुओं द्वारा स्वयं को हिन्दू कहना स्वाभाविक एवं सर्वमान्य है।

1.3 पौराणिक तथा आगमिक प्राचीन सन्दर्भ

प्रश्न : यह तो समझ में आ गया कि वैदिक 'सप्तसिन्धवः' और 'सिन्धवः' ही हिन्दू शब्द का मूल है। क्योंकि निरुक्त के नियमानुसार सिन्धवः को 'हिन्दवः' भी उच्चारित करेंगे। परन्तु उन मूल शब्दों के स्थान पर सीधे वर्तमान में प्रयुक्त 'हिन्दू' शब्द किन–किन प्राचीन ग्रन्थों में आया है?

उत्तर : ऋग्वेद का आगम कहा जाता है बृहस्पति आगम को। 'आगम' का अर्थ है व्यवहार–परम्परा। जो निगम यानी श्रुति–परम्परा की पूरक है। बृहस्पति–आगम को ऋग्वेद का आगम माना जाता है। बृहस्पति–आगम का परम्परा से प्रसिद्ध श्लोक है :–

> हिमालयं समारभ्य यावदिन्दु सरोवरम्।
> तं देवनिर्मितं देशं 'हिन्दूस्थानं' प्रचक्षते।।

अर्थात हिमालय से प्रारम्भ कर इन्दु सरोवर तक विस्तृत स्वाभाविक (देवकृत) देश को हिन्दूस्थान कहा जाता है। हिमालय के प्रथम अक्षर 'हि' से आरम्भ करके इन्दु सरोवर के अंतिम शब्द 'न्दु' की समाप्ति पर्यन्त विस्तृत देवनिर्मित देश को 'हिन्दूस्थान' कहा जाता है।

इसी प्रकार 'मेरू तन्त्र' नामक प्राचीन शास्त्र का कथन है – जिसमें 33वें प्रकरण में भगवान शिव जगदम्बा पार्वती से कहते हैं –

हिन्दूधर्मप्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्तिनः।
हीनं च दूषयत्वेव स हिन्दूः उच्यते प्रिये।।

अर्थात् हे प्रिये, भविष्य में हिन्दू धर्म का विलोप करने अर्थात उसे राजधर्म के रूप में संरक्षण नहीं देने वाले सम्राट भी होंगे। जो हीन विचारों, हीन भावों और हीन आचार को दूषित मानकर उन्हें त्याज्य मानता है, वह हिन्दू है। 'भविष्य पुराण' के प्रतिसर्ग पर्व के प्रथम खण्ड में कहा गया है –

'सप्त हिन्दूर्यावनी च'। अतः हिन्दू शब्द का वहाँ भी प्रयोग है। भविष्य पुराण में हिन्दू शब्द का प्रयोग अनेक बार है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भविष्य पुराण में सिन्धु स्थान और हिन्दू शब्द दोनों का ही प्रयोग हुआ है। भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व के खण्ड दो में लिखा है –

सिन्धुस्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम्।

अर्थात् सिन्धु स्थान 'या हिन्दू स्थान' आर्यों का उत्तम राष्ट्र है। भविष्य पुराण में ही अनेक भारतीय राजाओं का विस्तार से वर्णन है। उसमें प्रतिसर्ग पर्व के तृतीय खण्ड में हिन्दूस्थान की सीमाओं का वर्णन है – ''पूर्व में कपिलस्थान अर्थात् गंगा सागर, पश्चिम में बाह्लीक, उत्तर में चीन देश और दक्षिण में सेतुबन्ध। इस क्षेत्र में महाराज अनंगपाल के शासन में तथा अन्य अग्निवंशीय राजाओं के शासन में म्लेच्छ लोग भी आर्यधर्म का ही पालन करते थे। जिससे कलियुग भयभीत होकर नीलाचल पर्वत पर चला गया था।''

इसी पुराण में प्रतिसर्ग पर्व के इसी खण्ड में कहा गया है कि ''चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य का पौत्र शालिवाहन महाप्रतापी था और उसने दुष्टों को कठोर दण्ड दिया तथा उनका सारा कोष छीन लिया एवं सिन्धु स्थान (हिन्दूस्थान) को आर्यों का उत्तम स्थान निर्धारित किया तथा म्लेच्छों को सिन्धु के उस पार के प्रदेश में रहना नियत किया।''

'अद्भुत कोष' में लिखा है 'हिन्दूहिन्दूश्च प्रसिद्धौ दुष्टानां च विघर्षणें।' अर्थात् 'हिन्दू दुष्टों के मान–मर्दन के लिये प्रसिद्ध है।' इसी प्रकार 'शब्द कल्पद्रुम कोष' में आया है 'हीनं दूषयति इति हिन्दूः'। अर्थात् 'जो हीन भावों एवं हीन आचरण से दूरी बनाकर रखता है, वह हिन्दू है।'

'हेमन्तकविकोष' की उक्ति है – 'हिन्दूर्हि नारायणादिदेवताभक्तः।' अर्थात् 'हिन्दू उसे कहा जाता है, जो नारायण आदि देवों का भक्त है।' 'रामकोष' की उक्ति है –

हिन्दुर्दष्टो न भवति नानार्यो न विदूषकः।
सद्धर्मपालको विद्वान् श्रौतधर्मपरायणः।।

तात्पर्य यह कि 'हिन्दू न तो दुर्जन होता है, न अनार्य होता है और न निन्दक ही होता

है। जो सच्चे धर्म का पालक, विद्वान् और वेदधर्म में निरत है, वही हिन्दू है।'

'माधवदिग्विजय ग्रन्थ' में हिन्दू की परिभाषा यह दी हुई है –

ओंकारमूलमन्त्राढयः पुनर्जन्मदृढाशयः।
गोभक्तो भारतगुरूर्हिन्दुर्हिंसनदूषकः।।

अर्थात् ओंकार को मूलमन्त्र मानने वाला, पुनर्जन्म में दृढ़ श्रद्धा रखने वाला, गौभक्त तथा किसी भारतीय को ही गुरू मानने वाला और हिंसा को निंदनीय मानने वाला व्यक्ति हिन्दू है। उल्लेखनीय है कि इस परिभाषा में सभी सनानत धर्मावलंबी हिन्दूजन तो आते ही हैं सिक्ख, जैन, बौद्ध तथा आर्यसमाजी भी इसमें समाहित हैं। इस प्रकार यह हिन्दू का सुस्पष्ट लक्षण है।

पारसीकों का प्राचीन धर्मग्रन्थ है 'अवेस्ता'। उसमें भी हिन्दू शब्द का उल्लेख है।

'हुएनसांग की भारतयात्रा' पुस्तक के दूसरे अध्याय में हुएनसांग ने आरम्भ में ही कहा है– ''भारत का प्राचीन नाम 'शिन्तो' और 'हीन्दो' था। परन्तु शुद्ध उच्चारण 'इन्दु' है। यह उच्चारण सुनने में सुंदर है। चीनी भाषा में इसका अर्थ चन्द्रमा होता है। यह प्रसिद्ध है कि सम्पूर्ण प्राणी अज्ञान रूपी रात्रि में संसार चक्र का निरन्तर चक्कर लगाते रहते हैं। उन्हें किसी अन्य नक्षत्र का सहारा नहीं है। चन्द्रमा ही उस रात्रि में प्रकाश देता है। ठीक ऐसा ही प्रकाश महात्माओं और पवित्र विद्वानों का है। वे चन्द्रमा के समान संसार के जीवों को मार्ग दिखाते हैं। अतः अपनी पवित्रता और विद्वता के कारण इन विद्वानों के देश को 'इन्दु' कहा जाता है। इतिहास में इसी कारण लोग सामान्यतः भारतवर्ष को ब्राह्मणों का देश कहते हैं। जिसका अर्थ है विद्वानों और महात्माओं का देश। इसीलिये इसका मूल नाम 'इन्दु' है और हम इसे इन्दु नाम से ही वर्णन करेंगे। इसके तीन तरफ समुद्र है और उत्तर में हिमालय पर्वत है। पूर्व में घाटियाँ और मैदान हैं जिनमें पानी की अधिकता है। इसलिये फलफूल और अन्न आदि की बहुत अच्छी उपज होती है। दक्षिणी प्रान्त वनों और जड़ी–बूटियों से भरा है जबकि पश्चिमी भागी रेतीला, पथरीला और ऊसर सा है। यही इस देश का साधारण विवरण है।

इस प्रकार शास्त्रों, तन्त्र ग्रन्थों तथा पुराणों में हिन्दू शब्द के प्राचीन प्रयोग हैं। साथ ही, यवनों और पारसीकों के शास्त्रों एवं वृतान्तों में हिन्दू शब्द का प्राचीन प्रयोग पाया जाता है।

1.4 हिन्दू शब्द देशवाचक है या गुणधर्मवाचक?

प्रश्न : तो क्या हिन्दू शब्द देशवाचक है?

उत्तर : वैदिक काल में हिन्दू शब्द निश्चय ही देशवाचक था। क्योंकि तब तक समस्त् हिन्दूस्थान में सनातनधर्म को जानने और मानने वाले हिन्दू ही रहते थे। जो धर्म को सार्वभौम मतों एवं नियमों के ही रूप में जानते थे और जानते हैं। अतः किसी भी महान विभूति को उसका प्रवर्तक नहीं मानते। पोषक, रक्षक, पालक और साधक ही मानते हैं। परन्तु इस्लाम, ईसाइयत आदि धर्म नहीं हैं। न्यू आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में धर्म शब्द की प्रविष्टि अलग है, रिलीजन शब्द की प्रविष्टि अलग है।

तदनुरूप, धर्मवह है जो हिन्दुओं एवं बौद्धों द्वारा मान्य सार्वभौम नियम एवं मूल्य हैं। किसी भी आस्था प्रवर्तक विभूति के वचनों द्वारा धर्म निर्धारित नहीं होता। धर्म सार्वभौम

मानव–मूल्य हैं। इस्लाम, ईसाइयत आदि रिलीजन हैं। वे क्रमशः पैगंबर साहब हजरत मुहम्मद तथा जीसस द्वारा प्रवर्तित आस्था–पंथ हैं। अतः मुसलमानों, ईसाइयों आदि को हिन्दू नहीं कहा जा सकता। क्योंकि सार्वभौम मानव मूल्यों में श्रद्धा रखते ही मजहब और रिलीजन का वर्तमान स्वरूप स्थिर नहीं रह जाता। धर्म 'मोमिन' और 'काफिर', 'बिलीवर' और 'नान बिलीवर' मनुष्यों में कोई भेद नहीं कर सकता। वह तो धर्म और अधर्म का ही भेद मानता है। अर्थात असत्य, चोरी, हिंसा, अनाचार आदि अधर्म हैं तथा सत्य, अहिंसा, अस्तेय, शौच, आचार धर्म हैं। यही हिन्दू धर्म द्वारा प्रतिपादित मानव – धर्म है। जो सभी मनुष्यों द्वारा अवश्य पालनीय है। इसलिए भारत में रहने वाले मुस्लिम ईसाई आदि तब तक हिन्दू नहीं कहला सकते, जब तक वे सार्वभौम मानव–मूल्यों में श्रद्धा को सर्वमान्य नहीं मान लेंगे। अर्थात् सत्य, अहिंसा, अस्तेय, संयम और संग्रह की मर्यादा, आन्तरिक और बाहरी पवित्रता, आदर्श के लिए कष्ट सहन, सर्वव्यापी भगवान में श्रद्धा, हर जीव में ईश्वर का अंश विद्यमान मानना और इस सत्य का बारम्बार स्मरण करना – इन यमों और नियमों में श्रद्धा रखने वाले मुस्लिम और ईसाई भी हिन्दू ही हैं।

यदि वे यह मान लें कि सभी मनुष्यों की पहचान और उनसे व्यवहार सार्वभौम मानव–मूल्यों का पलान करने या न करने के ही आधार पर किया जाना चाहिए, तो वे हिन्दू ही मान्य होंगे। इसी प्रकार अन्य देशों में रहने वाले भी वे सभी लोग हिन्दू कहे जाएँगे जो वेदों तथा धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित सार्वभौम मानव–मूल्यों में श्रद्धा रखें।

इस प्रकार समस्त् धर्मनिष्ठ भारतीय ही 'हिन्दू' हैं। क्योंकि 'हिन्दू' शब्द का मूल वेदों में है।जो हिन्दू वेदों और वेद सम्मत शास्त्रों के अनुसार अपना जीवन जीते हैं, उन्हें आर्य कहा जाता है और जिस क्षेत्र में विशेषकर निष्ठापूर्वक वैदिक धर्म का पालन किया जाता रहा है उसे मनुस्मृति में आर्यावर्त कहा गया है। समस्त् भारतवर्ष में वेदों के प्रति असीम श्रद्धा रही है। इसलिये प्रायः समस्त् भारत को ही आर्यावर्त कह दिया जाता है। हिन्दुओं का अपना राष्ट्र वही है जहाँ वैदिक धर्म का पालन हो। इस अर्थ में ऋग्वेद में त्रसदस्यु ने कहा है कि 'मेरा राष्ट्र दोनों ओर है।' जिसका अर्थ भारतरत्न डॉ. पांडुरंग वामन काणे ने दोनों गोलार्ध में उस समय भारत राष्ट्र होना बतायाहै। ऋग्वेद के ही सप्तम मण्डल में 'राष्ट्र' शब्द का कई बार प्रयोग हुआ है। अथर्ववेद में माता पृथ्वी से प्रार्थना है कि वह 'राष्ट्र' को बल और दीप्ति दे। इस प्रकार यह 'हिन्दू राष्ट्र' को बलशाली और तेजोमय बनाने के लिये की गई प्रार्थना है।

1.5 'हिन्दू राष्ट्र' का विस्तार कहाँ तक है

प्रश्न : हिन्दू राष्ट्र का विस्तार कहाँ तक है?

उत्तर : भारतवर्ष ही हिन्दू राष्ट्र है। प्राचीनतमकाल से जिसे हिन्दू राष्ट्र कहा जाता रहा है, उसे ही भारतवर्ष भी कहा गया है। महाभारत में भीष्म पर्व के अन्तर्गत जम्बूखण्ड विनिर्माण पर्व में धृतराष्ट्र को संजय भारतवर्ष की सीमायें बताते हैं और उसमें 250 जनपदों का उल्लेख करते हैं। जिनमें मुख्य हैं – कुरू, पाँचाल, शाल्व–माद्रेय–जांगल, शूरसेन, पुलिन्द, बोध, माल, मत्स्य, कुशल्य, कौशल्य, कुन्ति, कान्ति, कोसल, चेदि, करूष, भोज, सिन्धु–पुलिन्द, उत्तमाश्व, दशार्ण, मेकल, उत्कल, पाँचाल, धुरंधर, गोधा, मद्र कलिंग, काशी, कुक्कुर, अवन्ति, गोमन्त, विदर्भ, अश्मक, गोपराष्ट्र, मल्लराष्ट्र, शक, विदेह, मगध, अंग, वंग, बाह्लीक, आभीर, अपरान्त, परान्त, केकय, अन्ध्र, अन्तर्गिरि, बहिर्गिरि, भार्गव, पुण्ड्र, भग, किरात, निषाद, निषध, आनर्त, नैर्ऋत, कुन्तल, सिन्धु सौवीर, गान्धार, बर्बर, सिद्ध, ताम्रलिप्तक, औण्ड्र, म्लेच्छ, कच्छ, वज्र, वध्र, करीषक,

कुलिन्द, द्रविड़, केरल, कर्णाटक, चोल, कोंकण, कटक, कूकुर, काक, यवन, चीन, काम्बोज, दरद, हूण, पारसीक, काश्मीर, खाशी, पह्लव, आभीर, शूद्र आदि। इसी विवरण को गुरूजी के नाम से प्रसिद्ध श्री माधव सदाशिव गोलवलकर ने सरल ढंग से इन शब्दों में कहा है – 'हिमालय की समस्त् उपत्यकाओं एवं गिरि–गहवरों सहित तीनों ओर से समुद्र से घिरा हुआ यह राष्ट्र हिन्दू राष्ट्र है।' स्पष्ट रूप से इसमें तिब्बत, अजरबेजान, कजाकिस्तान, ताजकिस्तान, तुर्क्रमेनिस्तान, खोतान, मंगोलिया, उत्तर चीन तथा रूस के अनेक भागों सहित सम्पूर्ण क्षेत्र आता है। जिस समुद्र से भारत घिरा हुआ है उसे मूल रूप में इन्दु सागर कहते थे और इन्दु सागर से आवेष्टित भूमि को 'सिन्धु' राष्ट्र या 'हिन्दू राष्ट्र' कहा जाता रहा है। इन्दु सागर को अरब सागर कहना अंग्रेजों ने 20वीं शती ईस्वी में आरम्भ किया है। वस्तुतः सिन्धु का अर्थ भी इन्दु यानी चन्द्रमा होता है। स्पष्ट रूप से यह विश्व का एक प्राचीनतम नैसर्गिक राष्ट्र है। पृथ्वी में इस राष्ट्र की स्थिति के विवरण प्राचीन काल से प्राप्त होते हैं। पुराणों और धर्मशास्त्रों में भी इसकी सीमाओं के विवरण विस्तार से दिए गए हैं।

मत्स्य महापुराण में अध्याय 121 एवं 122 में पुनः जम्बूद्वीप तथा भारतवर्ष के विषय में और अध्याय 123 में गोमेदकद्वीप एवं पुष्कर द्वीप के विषय में वर्णन दिये गये हैं। इनमें से अध्याय 121 के 82 श्लोकों में भारतवर्ष का विस्तार से वर्णन दिया गया है। प्रारम्भ में हिमालय पर्वत का और उसके पृष्ठभाग में स्थित कैलास पर्वत का वर्णन है और उसके बाद कैलास की उपत्यका में मन्दोदकं सरोवर का वर्णन है जिसका जल पवित्र, निर्मल और शीतल है। वहाँ से मन्दाकिनी नदी निकलती है और उसके निकट ही अच्छोद सरोवर है।

कैलाश के दक्षिण पूर्व में हेमशृंग नामक विशाल पर्वत है और उसके पदप्रान्त में लोहित सरोवर है जहाँ से लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) नद निकलता है। इसके बाद इस पुराण में महाराज भगीरथ की तपस्या और गंगाजी को भूतल पर लाने का विवरण दिया हुआ है। इसके साथ ही गंगाजी की पश्चिम में बहने वाली धाराओं के रूप में सिन्धु, चक्षु, सीता आदि सात नदियों का विवरण दिया है और यह बताया है कि सिन्धु के तट पर दरद, गांधार, कुहू, सैन्धव आदि कई राज्य हैं। इसके बाद मेरू पर्वत के पार्श्व भाग से चन्द्रप्रभ नामक सरोवर से पुण्यसलिला जम्बूनदी के निकलने का वर्णन है। जिसमें जाम्बूनद नाम का स्वर्ण पाया जाता है। आगे इस पुराण में कुरू राज्य का वर्णन है जिसमें अत्यन्त विस्तृत 12 सरोवर हैं, जो कमलों और मछलियों से भरे रहते हैं। ये नदियाँ बिना वर्षा के भी कुरू राज्य को उर्वर और सरस रखती हैं। दक्षिण में समुद्र तक विस्तृत दक्षिणापथ है। इस प्रकार भारतवर्ष का वर्णन इस अध्याय में किया गया है। इसी पुराण के 124वे एवं 125वे अध्याय में सूर्य और चन्द्रमा की गतियों का वर्णन है तथा उसके आगे ग्रहों के विषय में वर्णन है।

विष्णु पुराण के द्वितीय अंश के दूसरे अध्याय में भी जम्बूद्वीप एवं उसके अन्तर्गत भारतवर्ष का वर्णन किया गया है। जम्बूद्वीप के मध्य में सुमेरू पर्वत है जिसकी ऊँचाई 84 हजार योजन है और यह पृथ्वी के भीतर 16 हजार योजन धंसा हुआ है। यह पर्वत इस पृथ्वीरूपी कमल की कर्णिका (कोश) जैसा है। मेरू पर्वत के दक्षिण की ओर भारतवर्ष है। उत्तर की ओर उत्तर कुरू है। इस प्रकार विष्णु पुराण में भारतवर्ष की समायें अंक्ति हैं।

द्वितीय अंश के तीसरे अध्याय के पहले ही श्लोक में कहा गया है कि जो समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित है, उस देश को भारतवर्ष कहते हैं और भारतवर्ष की सन्ततियों को भारती अर्थात् भरतवंशी कहते हैं। उसका विस्तार भी दूसरे

एवं तीसरे श्लोक में दिया हुआ है तथा अगले दो श्लोकों में इसकी महिमा बताई गई है–

नवयोजनसाहस्रो विस्तारोऽस्य महामुने।
कर्मभूमिरियं स्वर्गमपवर्गं च गच्छताम्।।2

महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षपर्वतः।
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तात्र कुलपर्वताः।।3

अतः सम्प्राप्यते स्वर्गो मुक्तिमस्मात्प्रयान्ति वै।
तिर्यक्त्वं नरकं चापि यान्त्यतः पुरुषा मुने।।4

इतः स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यं चान्तश्च गम्यते।
न खल्वन्यत्र मर्त्यानां कर्म भूमौ विधीयते।।5

अर्थात् इसका विस्तार 9 हजार योजन है। स्वर्ग और मोक्ष दोनों प्राप्त कराने वाली कर्मभूमि यही है। यहाँ पापकर्म करने वाले लोग नरक जाते हैं अथवा पशु–पक्षी आदि योनियों में जन्म लेते हैं। मध्य स्तर का अर्थात् मिश्रित सा जीवन जीने वाले यहाँ पुनः मनुष्य बनकर जन्म लेते हैं। पृथ्वी में यहाँ के सिवा और कहीं भी मनुष्य के लिये कर्मभूमि नहीं है। इसके आगे के श्लोकों में भारतवर्ष के विषय में और भी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी हुई हैं।

भारतस्यास्य वर्षस्य नवभेदान्निशामय।
इन्द्रद्वीपः कसेरूश्च ताम्रपर्णो गभस्तिमान्।।6

नागद्वीपस्तथा सौम्यो गन्धर्वस्त्वथ वारूणः।
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः।।7

योजनानां सहस्रं तु द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरात्।
पूर्वे किराता यस्यान्ते पश्चिमे यवनाः स्थिताः।।8

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या मध्ये शूद्राश्च भागशः।
इज्यायुधवाधिज्याद्यैर्वर्तयन्तो यवस्थिताः।।9

शतद्रूचन्द्रभागाद्या हिमवत्पादनिर्गताः।
वेदस्मृतिमुखाद्याश्च पारियात्रोद्भवा मुने।।10

नर्मदा सुरसाद्याश्च नद्यो विन्ध्याद्रिनिर्गताः।
तापीपयोष्णीनिर्विन्ध्याप्रमुखा ऋक्षसम्भवाः।।11

गोदावरी भीमरथी कृष्णवेण्यादिकास्तथा।
सह्यपादोद्भवा नद्यः स्मृताः पापभयापहाः।।12

कृतमाला ताम्रपणीप्रमुखा मलयोद्भवाः।
त्रिमासा चार्यकुल्याद्या महेन्द्रप्रभवाः स्मृताः।।13

ऋषिकुल्याकुमाराद्याः शुक्तिमत्पादसम्भवाः।
आसां नद्युपनद्यश्च सन्त्यन्याश्च सहस्रशः।।14

तास्विमे कुरुपान्चाला मध्यदेशादयो जनाः।
पूर्वदेशादिकाश्चैव कामरूपनिवासिनः।।15

पुण्ड्राः कलिंगा मगधा दक्षिणाद्याश्च सर्वशः।
तथापरान्ताः सौराष्ट्राः शूराभीरास्तथाबर्फदाः।।16

कारूषा मालवाश्चैव पारियात्रनिवासिनः।
सौवीराः सैन्धवा हूणाः साल्वाः कोशलवासिनः।
माद्रारामास्तथाम्बष्ठाः पारसीकादयस्तथा।।17

आसां पिबन्ति सलिलं वसन्ति सहिताः सदा।
समीपतो महाभाग हृष्टपुष्टजनाकुलाः।।18

चत्वारि भारते वर्षे युगान्यत्र महामुने।
कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिश्चान्यत्र न कंचित्।।19

तपस्तप्यन्ति मुनयो जुह्वते चात्र यज्विनः।
दानानि चात्र दीयन्ते परलोकार्थमादरात्।।20

पुरुषैर्यज्ञपुरुषो जम्बूद्वीपे सदेज्यते।
यज्ञैर्यज्ञमयो विष्णुरन्यद्वीपेषु चान्यथा।।21

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने।
यतो हि कर्मभूरेषा ह्यतोऽन्या भोगभूमयः।।22

अत्र जन्मसहस्राणां सहस्रैरपि सत्तम।
कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्यसंच्यात्।।23

अर्थात् इस भारतवर्ष के नौ भाग हैं। यह समुद्र से घिरा हुआ द्वीप भारत (कुमारी द्वीप) है। यह द्वीप उत्तर से दक्षिण तक नौ सहस्र योजन है। इसके पूर्वीय भाग में किरात लोग और पश्चिम में यवन बसे हुए हैं तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रगण वर्णविभागानुसार मध्य में रहते हैं। हे मुने! इसकी शतद्रू और चन्द्रभागा आदि नदियाँ हिमालय की तलैटी से पारियात्र पर्वत से निकलती हैं। वेदों और स्मृतियों की रचना इसी पवित्र भूमि में हुई है। नर्मदा और सुरसा आदि विन्ध्याचल से तथा तापी, पयोष्णी और निर्विन्ध्या आदि ऋक्षगिरि से निकली हैं। गोदावरी, भीमरथी और कृष्णवेणी आदि पापहारिणी नदियाँ सह्यपर्वत से उत्पन्न हुई हैं। कृतमाला और ताम्रपर्णी आदि मलयाचल से, त्रिमासा और आर्यकुल्या आदि महेन्द्रगिरि से तथा ऋषिकुल्या और कुमारी आदि नदियाँ शुक्तिमान् पर्वत से निकली हैं। इनकी और भी सहस्रों शाखा नदियाँ और उपनदियाँ हैं।

इन नदियों के तट पर कुरु, पान्चाल और मध्यदेशादि के रहने वाले, पूर्वदेश और कामरूप के निवासी, पुण्ड्र, कलिंग, मगध और दाक्षिणात्यलोग, अपरान्तदेशवासी, सौराष्ट्रगण तथा शूर, अभीर और अबर्फदगण, कारूष, मालव और पारियात्रनिवासी,

सौवीर, सैन्धव, हूण, साल्व और कोशल देशवासी तथा माद्र, आराम, अम्बष्ठ और पारसीगण रहते हैं। हे महाभाग! वे लोग सदा आपस में मिलकर रहते हैं और इन्हीं का जल पान करते हैं। इनकी सन्निधि के कारण वे बड़े हष्ट–पुष्ट रहते हैं।

(इन श्लोकों तथा पुराणों और शास्त्रों के अन्य बहुत से वचनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि शक, यवन, किरात, हूण, दरद, बल्ख, बाह्लीक, पारसीक आदि सभी भारत के ही निवासी हैं और भारत की सीमा पश्चिम में यवन देश तक, उत्तर में रूस की सीमा तक तथा पूर्व, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम में तीनों ओर से समुद्र से वेष्ठित है। यूरोपीय लोगों ने कुछ तो अज्ञानवश और कुछ दुष्टतावश यवनों, शकों, हूणों, किरातों, पारसीक आदि को भारत से बाहर के लोग समझा या प्रचारित कियापरन्तु हमारे सभी शास्त्र इन सबको भारतीय ही बताते हैं। साथ ही बहती हुई स्वच्छ जलवाली नदियों के जल में विशेष पोषक शक्ति है, यह भी सभी पुराणों में बारम्बार कहा है।)

आगे के श्लोकों में कहा है – हे मुने! इस भारतवर्ष में ही समय–समय पर ये चार युग होते हैं – सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। अन्यत्र कहीं ये चार युग नहीं होते। क्योंकि भारतवर्ष ही कर्मभूमि है। अन्यान्य देश तो भोग–भूमियाँ हैं (जिस प्रकाश पशु भोग योनियाँ हैं, कर्मयोनि नहीं है। उसी प्रकार भारत से बाहर के देश भोग भूमि हैं, कर्मभूमि नहीं। वे स्वभाव से बन्धे हुये बरतते हैं। भारतीय मनुष्य को शास्त्रों के ज्ञान और पवित्र भूमि की विशेषता के कारण सद्–असद्, धर्म–अधर्म, आदि का शास्त्र सम्मत विवेक होता है। अतः यहाँ किये गये कर्म अगली गति निर्धारित करते हैं)। इस क्षेत्र में यज्ञों द्वारा यजन किया जाता है और भगवान विष्णु का अनुग्रह प्राप्त होता है। इसलिये जम्बूद्वीप श्रेष्ठ है और उसमें भी भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है। अन्य द्वीपों में और अन्य देशों में अन्य प्रकार से उपासनायें होती हैं। भारतवर्ष में अनेक जन्मों के पुण्य के उदय से ही जन्म होता है।

इसके आगे 24वाँ श्लोक भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है –

> गायन्ति देवाः किल गीतकानि
> धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे।
> स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
> भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।24

अर्थात् देवता भी भारतभूमि का यश गाते हैं। वे कहते हैं कि भारतभूमि में जन्म लेने वाले लोग धन्य हैं क्योंकि वे स्वर्ग और मोक्ष दोनों गतियाँ देने वाली भारत भूमि में जन्म लेते हैं।

इस प्रकार भारत वर्ष की सीमायें और इसकी महिमा, दोनों का पुराणों और धर्मशास्त्रों में विस्तार से वर्णन है। यही कारण है कि यहाँ के सभी पर्वतों और नदियों तथा उनके तट पर या उनके मध्य अथवा तलैटी में स्थित तीर्थों का भी धर्मशास्त्रों में विस्तार से वर्णन किया गया है।

1.5.1 हिन्दू राष्ट्र और भारत

प्रश्न : इसका अर्थ है कि हिन्दू राष्ट्र या हिन्दू स्थान के ही समान भारतवर्ष भी प्राचीन नाम है?

उत्तर : निश्चय ही, भारत नाम भी अत्यन्त प्राचीन है। वेदों में भरतवंश का वर्णन है। यद्यपि वहाँ एक देश या राष्ट्र के रूप में भारत का पृथक उल्लेख नहीं है। वेदों में

समस्त् विश्व के विषय में ही अधिकांश कथन हैं। वहाँ तो मनुष्य मात्र को अमृततत्त्व की सन्तति कहा गया है।

यजुर्वेद के 11वें अध्याय का का प्रसिद्ध 5वाँ मन्त्र है–

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोकऽएतु पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः।।

अर्थात् हे अमृत तत्त्व (अर्थात् परमात्मा) के पुत्र, ध्यान से सुनो। ब्रह्म से योगसम्बन्ध रखनेवाले पूर्व में जो महान योगी हुये हैं, उन पुण्य श्लोकों का मार्ग ही वीरों और विद्वानों का मार्ग है। उस मार्ग पर चलकर ही तुम दिव्य धामों को प्राप्त करोगे।

इस प्रकार वेद तो समस्त् मनुष्यों को अपने अमृतपुत्र होने की अर्थात् जन्म से ही दिव्य और श्रेष्ठ होने की घोषणा करते हैं और उस मूल स्वरूप को प्रत्येक व्यक्ति जाने, यह उपदेश करते हैं। परन्तु साथ ही ऐतरेय ब्राह्मण में भारतवर्ष का और उसकी सीमाओं का स्पष्ट उल्लेख है। ऐतरेय ब्राह्मण ऋग्वेद का ही ब्राह्मण ग्रन्थ है और उसमें भारतवर्ष की सीमाओं का स्पष्ट वर्णन है। विशेषकर प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, दक्षिण एवं ध्रुव मध्यमा प्रतिष्ठा – भारत के इन पाँच भागों का वहाँ स्पष्ट वर्णन है। परन्तु मुख्य बात यह है कि मनु ने भारत के विभिन्न भूभागों का विशेषकर मध्यदेश, ब्रह्मावर्त और आर्यावर्त का स्पष्ट वर्णन किया है तथा महाभारत में भी समस्त् भारतवर्ष की सीमायें वर्णित हैं। हिन्दू देश या हिन्दू राष्ट्र ही भारतवर्ष है, यह ब्राह्मण ग्रन्थों, महाभारत तथा मनुस्मृति से स्पष्ट हो जाता है।

ऐतरेय ब्राह्मण में तो यह भी कहा है कि – 'पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराट्।'

अर्थात् समुद्र पर्यन्त यानी समुद्र सहित जितनी भी यह सम्पूर्ण पृथ्वी है, वह सब एक ही आर्य राजा के शासन में होना चाहिये। अतः स्पष्ट है कि वैदिक काल तक वस्तुतः हिन्दू देश या हिन्दू राष्ट्र यह समस्त् पृथ्वी ही था। इसी प्रकार महाभारत काल से समस्त् मध्य एशिया और उत्तरी ध्रुव से हिन्दू महासागर तक विस्तृत क्षेत्र को ही भारतवर्ष कहा गया है। इस प्रकार भारत नाम भी प्राचीन है।

मत्स्य पुराण के अनुसार स्वायम्भुव मनु के वंश में उत्पन्न महाबली वेन चक्रवर्ती सम्राट थे परन्तु वे धर्मविमुख हो गएँ तब महर्षियों ने उन्हें नष्ट कर उनके पुत्र पृथु को सम्राट बनायाँ पृथु समस्त् भूमण्डल के राजा हुये। उनके कारण ही इस समस्त् भूमि को पृथ्वी कहा जाता है। इसके बाद भारतवर्ष में सूर्यवंशी एवं चन्द्रवंशी सम्राटों ने शासन किया, जिनका विस्तार से वर्णन मत्स्य पुराण तथा अन्य पुराणों में है। पुराणों में ही जम्बूद्वीप सहित पृथ्वी के सभी महाद्वीपों का वर्णन है और उनके मुख्य पर्वतों, नदियों तथा प्रत्येक महाद्वीप की लंबाई, चौड़ाई का भी वर्णन है।

अत्यन्त प्राचीन काल से भारत नाम प्रचलित है। क्योंकि मनु से ही समस्त् मानव जाति प्रवर्तित है और प्रलयकाल के उपरान्त मनु ने समस्त् पृथ्वी का भरण पोषण किया था, इसलिये मनु को ही भरत कहा जाता है। उसके उपरान्त ऋषभदेव एवं उनकी पत्नी जयंती के सबसे बड़े पुत्र भरत हुये और फिर सम्राट दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र भी भरत के नाम से प्रसिद्ध हुये। उसके बाद से इस हिन्दू राष्ट्र अर्थात् भारतवर्ष में सभी चक्रवर्ती सम्राटों को भारत के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। इसीलिये महाभारत में धृतराष्ट्र को भी भारत कहकर सम्बोधित किया गया है और युधिष्ठिर तथा अर्जुन को भी भारत कहा गया है। इस प्रकार भारत नाम भी अत्यंत प्राचीन है। वेदों में जिसे

हिन्दू देश (सिन्धु देश) कहा गया है, वही ब्राह्मण ग्रन्थों, महाभारत, पुराणों, धर्मशास्त्रों, इतिहासग्रन्थों और महाकाव्यों में भारतवर्ष के नाम से वर्णित है।

1.5.2 हिन्दू राष्ट्र की व्याप्ति

प्रश्न : पृथ्वी में हिन्दू राष्ट्र भारत की स्थिति के प्राचीन विवरण कहाँ–कहाँ हैं?

उत्तर : अत्यंत प्राचीन काल से भारतीय धर्मशास्त्रों एवं पुराणों में पृथ्वी की सरंचना का और उसके विभागों का तथा उन विभागों में से एक भारतवर्ष का विवरण विस्तार से मिलता है। जिनमें से कुछ का उल्लेख हम कर चुके हैं। पुनः स्मरण कर लें कि विष्णुपुराण के द्वितीय अंश के दूसरे अध्याय में पृथ्वी का वर्णन है। पृथ्वी के सात द्वीप गिनाये गये हैं और उन सातों द्वीपों को घेरे हुये समुद्रों के नाम गिनाये गये हैं। सातवें श्लोक में बताया गया है कि उन द्वीपों के मध्य में जम्बू द्वीप है और जम्बू द्वीप के मध्य में सुवर्णमय सुमेरू पर्वत है :–

> **जम्बूद्वीपः समस्तानामेतेषां मध्यसंस्थितः।**
> **तस्यापि मेरूर्मैत्रेय मध्ये कनकपर्वतः।।**

इस जम्बूद्वीप का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसी में आकाश स्थित महापुरी से गंगा जी के हिमालय में अवतरित होने का वर्णन है जो चार धाराओं के रूप में विभक्त होती है। इनमें से अलकनन्दा, उत्तर से दक्षिण की ओर भारतवर्ष में आती है और पूर्व की ओर जाकर समुद्र में मिल जाती है। इसी अंश के तीसरे अध्याय में भारतखण्ड का वर्णन है। जो समुद्र के उत्तर हिमालय तक फैला हुआ है।

विष्णु पुराण के द्वितीय अंश के इस तीसरे अध्याय का पहला ही श्लोक है :–

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

अर्थात् जो राष्ट्र समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में विस्तृत है उसे भारतवर्ष कहते हैं और वहाँ की सन्ततियों को भारती कहा जाता है।

इससे आगे के श्लोकों में कहा गया है –

> **नवयोजनसाहस्त्रो विस्तारोऽस्य महामुने।**
> **कर्मभूमिरियं स्वर्गमपवर्गं च गच्छताम्।।2**

> **महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षपर्वतः।**
> **विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तात्र कुलपर्वताः।।3**

> **अतः सम्प्राप्यते स्वर्गो मुक्तिमस्मात्प्रयान्ति वै।**
> **तिर्यक्त्वं नरकं चापि यान्त्यतः पुरूषा मुने।।4**

> **इतः स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यं चान्तश्च गम्यते।**
> **न खलवन्यत्र मर्त्यानां कर्म भूमौ विधीयते।।5**

अर्थात् यह नौ हजार योजन विस्तृत है तथा यह स्वर्ग और अपवर्ग प्राप्त कराने वाली कर्मभूमि है। इसके नौ भाग हैं। इसमें महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्ष, विन्ध्य और पारियात्र – ये सात बड़े कुलपर्वत हैं। हे मुनि, इस देश में शुभ कर्मों के द्वारा मनुष्य

स्वर्ग प्राप्त करते हैं और अधिक आध्यात्मिक उन्नति होने पर मुक्ति भी प्राप्त करते हैं तथा पापकर्म करने पर वे लोग नरक में पड़ते हैं अथवा मानवेतर योनियों में जन्म लेते हैं। अपने कर्मों के अनुसार मनुष्य यहाँ से स्वर्ग या मोक्ष प्राप्त करते हैं अथवा पुनः मनुष्य रूप में अगला जन्म लेते हैं या नीचे की योनियों में जन्म लेतेहैं। यह सब व्यक्ति के कर्मों के अनुसार फल होता है। इसीलिये इस भारतवर्ष को कर्मभूमि कहा जाता है।

आगे पराशर ऋषि ने भारत के नौ भागों को गिनाया है और उनका विस्तार भी बताया है तथा यह भी बताया है कि यहाँ चार वर्णों के लोग स्वधर्म पालन करते हुये रहते हैं। जिसका उल्लेख पूर्व में हो चुका है।

प्रश्न : और इण्डिया नाम कब से पड़ा?

उत्तर : यूरोप में अत्यन्त प्राचीनकाल से भारत के लिये इन्डी और इन्डिया नाम प्रचलित रहे हैं। जब वे लोग भारत आये, तब यहाँ के लोगों को भी इन्डू या हिन्डू सम्बोधित करने लगे। कुछ लोग तो उच्चारण समझ नहीं पाने के कारण गेन्टू भी कहते थे। बाद में, जब आधे से कुछ अधिक भारत में भारतीयों के सहयोग से ब्रिटिश भारतीय शासन स्थापित हुआ, तब से वे लोग अपने द्वारा शासित् क्षेत्र को 'ब्रिटिश इण्डिया' और शेष भारत को 'इण्डिया' कहने लगे। सत्ता हस्तान्तरण के बाद ब्रिटिश अधिकारियों की शर्तों के अनुसार संविधान सभा गठित हुई और भारत का संविधान बना। जिसमें इसे 'इण्डिया दैट इज भारत' कहा गया है। अर्थात् भारत के लिये शासन 'इण्डिया' के नाम का भी प्रयोग कर सकता है और 'भारत' नाम का भी। यही वर्तमान विधिक स्थिति है।

1.5.3 हिन्दू और भारतीय में भेद और अभेद

प्रश्न : तो हिन्दू भारतीय एवं अहिन्दू भारतीय में भेद कैसे करेंगे? क्या सभी भारतीयों को हिन्दू भी कहा जा सकता है?

उत्तर : मूल भारतीय ही हिन्दू हैं। जो वस्तुतः सनातन धर्म को मानते हैं और उपासना तथा जीवनशैली की विविधता को मानते हैं। इसीलिये किसी की उपासना पद्धति के आधार पर हिन्दू कभी किसी अन्य से कलह या टकराव नहीं करते। क्योंकि सृष्टि में चारों ओर व्याप्त विविधता की ही भांति आध्यात्मिक साधना और जीवनशैली की विविधता हिन्दू लोग स्वाभाविक मानते हैं। इसीलिये सनातनधर्म के शास्त्रों में मानव धर्म के बारे में लिखते समय मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद नहीं किया है। वे किन्हीं आस्थाओं वाले मनुष्यों को अन्य आस्थाओं वाले मनुष्यों से भिन्न होने का तथ्य तो जानते हैं। परन्तु इस आधार पर दो आस्था पद्धतियों में से एक को श्रेष्ठ और दूसरी को निकृष्ट या एक को सच्ची और दूसरी को झूठी नहीं मानते। सच और झूठ का निर्णय सबके लिये सर्वमान्य कसौटियों के आधार पर ही होता है, आस्था के आधार पर नहीं। इस प्रकार सभी मनुष्यों के लिये सामान्य धर्म एक ही है। मनु के अनुसार वे हैं – धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, बाहरी और भीतरी पवित्रता, इन्द्रियसंयम, धी (बुद्धि) की निरन्तर साधना, विद्या (परा एवं अपरा दोनों प्रकार की विद्या), सत्य और अक्रोध।

ये सार्वभौम मानव मूल्य हैं। इन्हें मानवधर्म और मनुष्यमात्र का सामान्यधर्म, सामासिक धर्म तथा सार्ववर्णिक धर्म भी कहा जाता है अर्थात यह केवल हिन्दुओं के लिये नहीं है अपितु समस्त् मनुष्यों के द्वारा पालनीय यह सार्वभौम मूल्य है।

इसीलिये वे सभी भारतीय हिन्दू हैं, जो सनातन धर्म के प्रति निष्ठावान हैं अर्थात् जो सार्वभौम नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठावान हैं। इस अर्थ में भारत के संविधान में

नागरिकों के जो मौलिक कर्त्तव्य संविधान के अनुच्छेद 51(क) में वर्णित हैं, जिनमें बन्धुता और सभी भारतीयों के प्रति समान भाईचारा (कॉमन ब्रदरहुड) की भावना तथा समरसता की भावना रखना मूल कर्त्तव्य का अंग है, वे इस संविधान के प्रति निष्ठा रखने वाले और मूल कर्त्तव्य का पालन करने वाले सभी भारतीय हिन्दू कहे जा सकते हैं। परन्तु यदि कोई भारतीय व्यक्ति अन्य भारतीयों को भय या प्रलोभन या दबाव से अथवा बहला–फुसलाकर उसे किसी मजहब या रिलीजन विशेष में इस भाव के साथ लाये कि उसका अपना मूल धर्म गलत है और घटिया है तथा अब अमुक मजहब या अमुक रिलीजन को अपनाने में ही उसका कल्याण है और इस प्रकार 'कॉमन ब्रदरहुड' की भावना को स्पष्ट रूप से जो खंडित करे, जो हिन्दुओं की मुख्य धारा को अपने समान सम्मानित और सम्मान योग्य व्यक्तियों का समूह नहीं माने, ऐसे भारतीय को हिन्दू कदापि नहीं कहा जा सकता।

1.6 हिन्दू राष्ट्र, आर्यावर्त और भारतवर्ष

प्रश्न : हिन्दू राष्ट्र, आर्यावर्त और भारतवर्ष में क्या भेद है?

उत्तर : वस्तुतः हिन्दू राष्ट्र, आर्यावर्त और भारत वर्ष पर्याय है। मनुस्मृति में आर्यावर्त का जो विशेष गौरव किया गया है, वह तत्कालीन समय में जिस क्षेत्र में वेदों और धर्मशास्त्रों के अनुसार वर्णाश्रम धर्म के प्रतिपालन पर विशेष बल दिया जाता था, उस क्षेत्र का वर्णनमात्र है। वह कोई राष्ट्र की भौगोलिक सीमा नहीं है। भौगोलिक सीमा बताने के लिये वहाँ मध्यदेश तथा ब्रह्मावर्त शब्द आये हैं। आर्य शब्द गुणसूचक है, जातिसूचक या स्थानसूचक नहीं। अतः सनातन धर्म का पालन करने वाले समस्त् राष्ट्र को ही आर्यावर्त कहा जायेगा। वही हिन्दू राष्ट्र है। इस प्रकार हिन्दू राष्ट्र आर्यावर्त और भारतवर्ष परस्पर पर्याय है।

विनायक दामोदर सावरकर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दूत्व' में स्पष्ट लिखा है कि यहाँ 'आर्य' शब्द का प्रयोग इसीलिए किया गया है ताकि सिन्धु नदी के इस ओर के अपने वैभवशाली राष्ट्र के तथा जातियों के सभी अनिवार्य घटकों का उसमें समावेश हो। इसमें वैदिक या अवैदिक, ब्राह्मण अथवा शूद्र आदि भेद नहीं किया गयाकेवल समान संस्कृति, रक्त–सम्बन्ध देश तथा राज्यसंस्था का उत्तराधिकार जिन्हें प्राप्त हुआ है, वे सभी 'आर्य' कहलाते हैं। इससे विपरीत हिंदुस्थान से सर्वथा भिन्न म्लेच्छ स्थान का अर्थ राष्ट्रीयता तथा जातीय एकात्मता की दृष्टि से भिन्न तथा परायों का देश ऐसा ही होता है।

1.6.1 'हिन्दू पद' के आधुनिक प्रयोग

प्रश्न : कृपया आधुनिक काल में हिन्दू शब्द के प्रयोगों के दृष्टान्त दीजिये?

उत्तर : आधुनिक काल में अनेक श्रेष्ठ काव्यों एवं गीतों में हिन्दू शब्द का प्रयोग निरन्तर होता रहा है। साथ ही आधुनिक महापुरूषों ने भी हिन्दू शब्द की बारम्बार व्याख्या की है।

12वीं शताब्दी ईस्वी के प्रसिद्ध काव्य पृथ्वीराज रासौ में कवि चन्दवरदाई ने सम्राट पृथ्वीराज के पिता को सम्बोधित करते हुये लिखा है –

> अटल ठाट महिपाठ, अटल तारागढ़ थानं,
> अटल नगर अजमेर, अटल हिंदव अस्थानं।

अटल तेज परताप, अटल लंकागढ डंडिय
अटल आप चहुवान, अटल भूमिजस मंडिय

जब उपद्रवकर्त्ता शहाबुद्दीन का वध कर दिया गया, तब कवि ने उल्लासपूर्वक कहा –

आज भाग चहुआन घर। आज भाग हिंदुवान।।
इन जीवित दिल्लीश्वर। गंज न सक्के आन।।

साथ ही यह भी लिखा –

निर्लज्ज म्लेच्छ लजे नहिं। हम हिंदु लजवानं।।

अर्थात् म्लेच्छ बेशर्म और ढीठ हैं। परन्तु हम हिन्दू तो शील–संकोच सम्पन्न होते हैं।

15वीं शताब्दी ईस्वी के 'पारिजातहरण' नामक नाटक की रचना सर्वगुणाकर ने की। इसमें एक पात्र के मुँह से पुनः 'हिन्दू' शब्द की परिभाषा स्पष्ट की गई है– 'हिनस्ति् तपसा पापान् दैहिकान् दुष्टमानसान्। हेतिभिः शत्रुवर्गे च स हिन्दूरभिधीयते'। अर्थात जो मन की दुष्ट वृत्तियों का एवं पापों का हनन करता है तथा शत्रुओं का संहार करता है, वह हिन्दू कहा जाता है।

इसी प्रकार 17वीं शताब्दी ईस्वी में महाकवि भूषण ने 'शिवराज बावनी' और 'छत्रसाल भूषण' दोनों ही ओजस्वी काव्यों में 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग बारम्बार किया है –

राखी हिंदुआनी, हिंदुआन के तिलक राख्यो
स्मृति और पुराण राख्यो वेद विधी सुनी मैं,
राखी रजपूती राजधानी राखी राजन की,
धरा मे धरम राख्या, राख्यो गुण गुणी में।।

भूषण सुकवि जीति हद्द मरहट्टन की
देस–देस कीरति बखानी तब सुनि मैं,
शाही के सपूत शिवराज शमशेर तेरी
दिल्ली दल दाबिक दिवाल राखी दुनि में।।

अर्थात् हे शाह के सपूत छत्रपति शिवराज, आपकी तलवार ने ही दिल्ली के तुर्क दल को दबाकर भारत में सबकी लाज रखी है। हिन्दुओं का तिलक और हिन्दू स्त्रियों का शील, वेदों, पुराणों और धर्मशास्त्रों की प्रतिष्ठा, राजपूतों का गौरव और राजाओं की राजधानी की रक्षा आपने ही की है। गुणीजनों के गुणों की रक्षा आपने की है और भारतभूमि में धर्म के रक्षक आप ही हैं। कवि भूषण कहते हैं कि मराठों की जीत अत्यधिक प्रशंसनीय है। उनकी कीर्ति देश–देश में बखानी जाती है और मैंने भी वह कीर्ति सुनी है।

हैवर हरट्ट साजि गैवर गरट्ट सम, पैदर थट्ट फौज तुरकांनकी

भुषण भनत रायचंपति को छत्रसाल रोप्यो रनख्याल।

अर्थात् हे महाराज चम्पतराय के सुपुत्र महाराज छत्रसाल आपने तुर्कों की ठट्ठ की ठट्ठ फौज को रोक दिया और उनके तोपों की गरज भी थाम ली। इस प्रकार रण में आपने अद्भुत शौर्य और पराक्रम दिखायाँ

इस प्रकार तुर्कों के धर्मघाती अनाचार को थामने वाले महान योद्धाओं छत्रपति शिवाजी महाराज और महाराज छत्रसाल की कीर्ति महान हिन्दू सम्राटों के रूप में ही कवियों ने गाई है।

17वीं शताब्दी ईस्वी में ही महान दशमेश गुरू गोविन्द सिंह जी ने भी कहा है –

सकल जगत् में खालसा पंथ गाजे।
जगे धर्म हिन्दू, सकल भंड भाजे।। (विचित्र नाटक, गुरूगोविन्दसिंह कृत)

अर्थात् महान गुरूओं के शिष्यों का खालसा पंथ सम्पूर्ण विश्व में यशस्वी हो। हिन्दू धर्म जाग्रत हो और जो भंड अर्थात् अराजक और अनाचार से युक्त पंथ हैं, वे भारत से भाग जायें।

छत्रपति शिवाजी महाराज ने 'हिन्दवी स्वराज' की स्थापना की प्रतिज्ञा की थी और विश्व के महानतम सेनापतियों में से एक श्रीमन्त बाजीराव पेशवा ने अटक से कटक तक हिन्दू धर्म की ध्वजा लहराने का संकल्प किया था।

इस प्रकार 'हिन्दू धर्म' शब्द का प्रयोग सदा व्यापक अर्थों में होता रहा है।

20वीं शताब्दी ईस्वी में लोकमान्य तिलक ने 'हिन्दू धर्म' की परिभाषा देते हुये लिखा –

'प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु। साधनानामनेकता। उपास्यानामनियमः। एतद धर्मस्य लक्षणम।'

अर्थात वेदों के प्रति प्रामाण्य बुद्धि रखना, साधना के रूपों की अनेकता पर सहज विश्वास तथा उपासना और उपास्य देवता के किसी एक ही रूप का आग्रह नहीं रखना – यह धर्म का लक्षण है। इस परिभाषा के द्वारा लोकमान्य ने 'हिन्दू धर्म' का ही लक्षण प्रतिपादित किया था।

परम पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज ने 20वीं शताब्दी ईस्वी में ही हिन्दू की यह परिभाषा दी है –

गोषु भक्तिभवेद्यस्य प्रणवे च दृढा मतिः।
पुनर्जन्मनि विश्वासः स वै हिन्दूरिति स्मृतः।।

अर्थात् जो गौभक्त हो, ओंकार में तथा पुनर्जन्म में जिसकी अटल श्रद्धा हो, वह हिन्दू है।

महात्मा गाँधी ने स्वयं को पक्का सनातनी हिन्दू कहा है। उनके अनुसार हिन्दू वह है जो निम्न मान्यताओं पर श्रद्धा रखता है –

1 वेद सृष्टि के आरम्भ से हैं और वे सर्वपूज्य हैं।

2 कर्मफल अटल है और अनिवार्य है।

3 पुनर्जन्म सत्य है।

4 ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है।

5 प्रत्येक जीव में ईश्वर का अंश है। अतः वह सदा ही पवित्र है। परन्तु अपने चित्त के मल और कषाय के कारण उसे यह आत्मज्ञान नहीं रहता।

6 अहिंसा ही परम धर्म है। अहिंसा का अर्थ है किसी भी प्राणी के प्रति द्रोहभाव का

सम्पूर्ण अभाव। किसी के भी प्रति द्रोह और द्वेष दुर्भाव रखना हिंसा है। हिंसा का अभाव अहिंसा है।

7 गौरक्षा प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है।

स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर ने हिन्दू की यह परिभाषा दी है –

आसिन्धोः सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दूरिति स्मृतः।।

अर्थात् सिन्धु महानद से लेकर समुद्रपर्यन्त विस्तृत भारतभूमि को जो अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि माने, वह हिन्दू है।

इसी प्रकार प्रभाकर श्रीधर रोड़े ने 'वृद्धस्मृति' का एक श्लोक इस विषय में उद्धृत किया है–

हिंसया दूयते यश्च सदाचरणतत्परः।
वेदगोप्रतिमासेवी स हिन्दूमुखशब्दभाक्।।

अर्थात् जो प्राणीमात्र और समस्त् महाभूतों के प्रति किसी भी प्रकार का द्वेष और द्रोह नहीं रखे तथा सदाचरण में उत्साहपूर्वक रत रहे, वेदों के प्रति जिसकी श्रद्धा हो और उनका अध्ययन, मन्न, श्रवण करे, गौसेवा करे तथा देवप्रतिमा के प्रति श्रद्धा रखे वही हिन्दू है।

आचार्य विनोबा भावे के अनुसार हिन्दू की परिभाषा यह है –

यो वर्णाश्रमनिष्ठावान् गोभक्तः श्रुतिमातृकः।
मूर्ति च नावजानाति सर्वधर्मसमादरः।।

उत्प्रेक्षते पुनर्जन्म तस्मान्मोक्षणमीहते।
भूतानुकूल्यं भजते स वै हिंदुरिति स्मृतः।।
हिंसया दूयते चित्तं तेन हिंदुरितीरितः।।

अर्थात् जो वर्णाश्रम व्यवस्था में निष्ठा रखता है, गौभक्त है, श्रुतियों को अपनी माता के समान पूज्य मानता है और सभी धर्मों का समान भाव से आदर करता है जिसका अर्थ है सबके लिये एक ही कसौटी रखता है, जो देवमूर्ति की अवमानना नहीं करता, पुनर्जन्म में जिसकी श्रद्धा है और जीवन मरण के चक्र से मुक्त होने की जो अभीप्सा रखता है तथा सभी जीवों से अनुकूल बर्ताव करता है और हिंसा से जिसका चित्त दुखी होता है, वह हिन्दू है।

इस तरह आधुनिक काल में हिन्दू की परिभाषा की निरन्तरता बनी रही है। प्राचीनतम वैदिक काल से लेकर निरन्तर हजारों वर्षों से हिन्दू शब्द का प्रयोग एक ही अर्थ में लगातार चल रहा है। इसकी प्राचीनता प्रमाणित है और आधुनिक समय में भी इसका प्रयोग स्पष्ट और निश्चित अर्थ में ही किया जाता है। भारतवर्ष के वे सभी लोग हिन्दू हैं जो शाश्वत सार्वभौम यमों और नियमों के पालन–रूपी मानवधर्म में अटल श्रद्धा रखते हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

1.7 सारांश

हिन्दू शब्द की पहचान कराने वाले तथ्यों का उल्लेख वेद से ही प्रारम्भ हो जाता है। इस इकाई में आपने ऋग्वेद और अथर्ववेद के सन्दर्भों का प्रारम्भ से ही अध्ययन किया है जिनमें हिन्दू विषयक तथ्यों का उल्लेख है। उन वर्णनों में सप्तसिन्धु और आर्य जैसे शब्दों से परिभाषित करते हुए मन्त्रों को भी उदाहरण के रूप में दिया गया है। वेद के बाद अन्य प्राचीन उदाहरणों में भी आपने पुराणिक मान्यता के आधार पर भी हिन्दू विषयक जानकारी प्राप्त किया है जैसे–

'भविष्य पुराण' के प्रतिसर्ग पर्व के प्रथम खण्ड में कहा गया है –

'सप्त हिन्दूर्यावनी च'। अतः हिन्दू शब्द का वहाँ भी प्रयोग है।

भविष्य पुराण में हिन्दू शब्द का प्रयोग अनेक बार है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भविष्य पुराण में सिन्धु स्थान और हिन्दू शब्द दोनों का ही प्रयोग हुआ है। भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व के खण्ड दो में लिखा है –

सिन्धुस्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम्।

अर्थात् सिन्धु स्थान 'या हिन्दू स्थान' आर्यों का उत्तम राष्ट्र है।

कालिका पुराण में कहा है –

कालेन बलिना नूनमधर्मकलिते कलौ।
यवनैर्घोरमाक्रान्ता हिंदवो विन्ध्यमाविशन्।।

अर्थात् बलवान कलि के प्रभाव से जब धर्म की न्यूनता हो गई, तब गंगा–यमुना क्षेत्र से चलकर हिन्दू लोग विंध्य क्षेत्र में भी बस गएँ यहाँ हिन्दू शब्द का स्पष्ट प्रयोग है।

'अद्भुत कोष' में लिखा है 'हिन्दूहिन्दूश्च प्रसिद्धौ दुष्टानां च विघर्षणें।' अर्थात् 'हिन्दू दुष्टों के मान–मर्दन के लिये प्रसिद्ध है।' इसी प्रकार 'शब्द कल्पद्रुम कोष' में आया है 'हीनं दूषयति इति हिन्दूः'। अर्थात् 'जो हीन भावों एवं हीन आचरण से दूरी बनाकर रखता है, वह हिन्दू है।'

पारसीकों का प्राचीन धर्मग्रन्थ है 'अवेस्ता'। उसमें भी हिन्दू शब्द का उल्लेख है।

'हुएनसांग की भारतयात्रा' पुस्तक के दूसरे अध्याय में हुएनसांग ने आरम्भ में ही कहा है– ''भारत का प्राचीन नाम 'शिन्तो' और 'हीन्दो' था। परन्तु शुद्ध उच्चारण 'इन्दु' है। यह उच्चारण सुनने में सुंदर है। चीनी भाषा में इसका अर्थ चन्द्रमा होता है। यह प्रसिद्ध है कि सम्पूर्ण प्राणी अज्ञान रूपी रात्रि में संसार चक्र का निरन्तर चक्कर लगाते रहते हैं। उन्हें किसी अन्य नक्षत्र का सहारा नहीं है। चन्द्रमा ही उस रात्रि में प्रकाश देता है। ठीक ऐसा ही प्रकाश महात्माओं और पवित्र विद्वानों का है। वे चन्द्रमा के समान संसार के जीवों को मार्ग दिखाते हैं। अतः अपनी पवित्रता और विद्वता के कारण इन विद्वानों के देश को 'इन्दु' कहा जाता है। इतिहास में इसी कारण लोग सामान्यतः भारतवर्ष को ब्राह्मणों का देश कहते हैं। जिसका अर्थ है विद्वानों और महात्माओं का देश। इसीलिये इसका मूल नाम 'इन्दु' है और हम इसे इन्दु नाम से ही वर्णन करेंगे। इसके तीन तरफ समुद्र है और उत्तर में हिमालय पर्वत है।

इस प्रकार शास्त्रों, तन्त्र ग्रन्थों तथा पुराणों में हिन्दू शब्द के प्राचीन प्रयोग हैं। साथ ही, यवनों और पारसीकों के शास्त्रों एवं वृतान्तों में हिन्दू शब्द का प्राचीन प्रयोग पाया जाता है।

1.8 शब्दावली

1. **विषाक्त वाणी** – जिन कथनों से अप्रिय बात निकलती है उसे विषाक्त वाणी कहते हैं। अथवा ऐसे वचन जो हितकर न हो
2. **देशवाचक**–भूभाग की सीमा में रहने वाला अथवा विशिष्ट पहचान की संस्कृति वाला।
3. **गुणधर्मवाचक**– मानवता, मूल्य, आचार जैसे आदर्शों का पालक।
4. **आर्यावर्त**–भारतवर्ष का नाम है। इसके लिए सरस्वती और दृशद्वती नदियों के अन्तर अर्थात् बीच के हिस्से से पहचान कराने का अर्थ ग्रहण किया जाता है।

1.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

इस इकाई में दिये गये विषयों को विस्तार से जानने के लिये निम्न शास्त्रों को देखना होगा–

1. बृहस्पति आगम
2. मेरूतंत्र
3. भविष्य पुराण
4. कालिका पुराण
5. हुएनसांग की भारतयात्रा (ठाकुर प्रसाद शर्मा कृत), शब्द महिमा प्रकाशन, दिल्ली
6. महाभारत (विशेषतः उद्योगपर्व, भीष्मपर्व के अन्तर्गत जम्बखण्ड निर्माण पर्व एवं शान्तिपर्व)
7. श्रीमद्भगवद्गीता
8. भारत का संविधान
9. कल्याण का 'हिन्दू संस्कृति अंक', गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित
10. माधव सदाशिव गोलवलकर कृत – 'विचार नवनीत'
11. हिन्दुत्व (हिन्दू धर्मकोष), रामनाथ गौड़, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

1.10 बोध प्रश्न

1. वैदिक मान्यता में हिन्दू विषयक तथ्यों का वर्णन कीजिए।
2. हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
3. हिन्दू और भारतीय पर टिप्पणी।
4. हिन्दू शब्द के आधुनिक प्रयोग पर टिप्पणी लिखिए।
5. क्या हम 'आर्यावर्त;'भारत' एवं हिन्दू शब्द के पर्याय के रूप में देख सकते हैं? विवेचना कीजिए।